



ॐ नमो गुरु-आत्मा मन कामन पुरगार धामी गारवा वृत्त

ॐ नमो गुरु-चाण्डमनकामन पुरगार धामि गारवा बुल
तिने सरील कदवात गुरुभाका धामि भाका धामि
नी जगुरु नथा फुररी गारनी गि गुरी चाण्डान बुल
उधार वसने राज चाण्डान से ते ती मं तीरी कदवात गुरु
रु देवी फु नौ त्र दे स्वर माहा देव की वावा हं फल स्वाहा धार
जप-२२ थो मंतर भी रे धाना ह पीतली का धे जी उतार मत
पे जी उरु रे ॥

हं फल स्वाहा - चार जप - ३ - थो मंत्र तार म जी ५ वो को
ची ये जी व

ॐ गुरु आग्या हे वृक्ष का ली के का ली आग नी ली मे धर्म
लि मा हा का ली धी र मह मा हा का ली गौ उ री पा र व ती के
वा वा हं फल स्वाहा - चार जप - २५ - थो मंत्र जो र या गु यो
जो र बो म ती वो ती वा सा री पी त जं न जी र को र स मा धा नु डी नु
जो र हा ता उ ह मंत्र र ले प नी स्वर गर नु

ॐ नरसींग उथ थ उथ हली मीत उथ उथ थक उथ उथ
तीन उथ उथ हरी हरी उथ साहा - भारजप - २५ -
मीतर भुत जोशा गुजी उ स प डूला इ हुने जारने

ॐ नमो भगवा सत्रु सैंगार वी युनु मती वाग मती माहा देव
परवती करुन व्यान उरु हु फा साहा - भारजप - २५ -
धो मीतर सीतांग जो रघाग वो क सी माग्या प नी वा नु द्रु द्रु स प
इला इ हु हु जारनु

हुनु मावी युनु तम ये स्वर ग उरी या वती माहा देव की वा वा

हेतु सावी सुनुत्तम ये स्वर गाउरी पावती माहा देव की वावा
हं फल स्वाहा - चार - २४ - थो मंतर वी सुनु जो रजु सा घायु

ॐ नमो गुरु भाग्या भुत पीसा वाई कै स कै स प देता इम
साव द हे न कु ब ले जार नु हं फल स्वाहा - चार जप - २२ थो
मंतर भुत पुना हल सा घायु गु र रे वा घायु

ॐ नमो गुरु भाग्या मं की कै मं वी भुत हं भी भुत कु मारी कै वी

कोटि वीच से समझा वीर वीर हनुमान वीर वीर राम उलही
मनवान के गुरु की नीति से हनुमान स्वामी - धार जप - २२ - थो
मंतर भुक्त हनुमान प्रणाम करुनु

ॐ श्री गुरु आगम भगिनी देवता गंगा मातृ सुर जे सादी हरी
हरी नत स्वामी - धार जप - २५ - थो मंतर मी पुगु प्रणाम करे
प्रणाम

ॐ नमः गुरु नमो नमो भक्त की पुमृमा वाटेश्वर सोती देवी मेश

स्येन लोडन रसीरुपा न फाली भैरै गुरु वाधौ लोडनी वाधौ
वाधौ लोडनी वाधौ

स्पेनलोउनरसीरुपानफयलीभेरैउरुवाधौलाइनीवाधौ
 वाधौकेवावाउरुकेवावा-धाराजप-२२-धोमंतरथागारुम
 सापानियायेउ

३ श्रीगणेश्वरिहनुमात्माह्वीरवापुर्नगरीत्रैवौसेतस्याह्वी-
रजाप-२२-थोमर्तरजोनाकेयागुआरथापगु

३५ श्री गीत नीरुनुका। तमाहावीरनापुनीगीतैवौसेहीहीफर
सेहोरवाधौलातवाधौ^{को सु}नाधौ^{धौ}कैरवाधौमातवाधौपरितव्यौ
हैसावा

प्राञ्जजोगीनीपरगाजोगीनीवावाहंकृतस्वाहा-धा
रजय-२२-धोमंतरावोकसीनीयेगु

ॐ नमः गुरुभ्याग्रावगुना रायेन कुं सैनको सवुना गरा
जा कुं सैनको सनेवा वा गुरु रचना गरा जाको धारदोरी
दीनु चारी दी साको ना गला इवली वीरी घना ग कुं सैनको वा
वाहंकृतस्वाहा-धारजय-४२-धोमंतरा गाली के गु ॥

ॐ नमः गुरुभ्याग्रा देवनकी सवा वा गुरु शोमतरा दी मनको धार धारकी
री देनरा दे सता इहानत बसो रागीनी भारने गुरु शोमतरा दी मनको
वीवा ~~वा~~ हाहंकृतस्वाहा-धारजय-४२-धोमंतरा रादे सता इहानत बसो

ॐ सीधी गुरु आग्या नासा जेहं फल स्वाहा - धार जप - २२ -
धोमंतर मवा वल सायी को हां मन्न सात जो पा तो न के गु ॥

ॐ सीधी गुरु आग्या साधये साधये मकर साधये सार मो वन
हे फल स्वाहा - धार जप - २२ - धोमंतर मवा वुये के गु

ॐ नम गुरु आग्या अगती ताहे पेल की सा जनी को वानी मेरा गु
रु आमी को वानी दुज जोगी नी परग जो वानी अगती ताहे
पेल की वानी हां नी वां हीर पा था डनी गुरु हे खरी की वा बाहं
फल स्वाहा - धार जप - २०० - धोमंतर दे मनि के जा सी क
जाती हा ॥ हां वल सा भी के गु

ॐ नम गुरु आग्या रु करी आँ पं आँ जु दवी के व पारा दे मा के

ॐ नमः शिवाय ॥ वल्लभा सा भो केशव ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ह्रीं कृतस्वाहा - चारुजप - १५ यो नैतरे शक्ये स वा के पुना हन्ता सा
प्रकैः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
चारुजप - १५ यो नैतरे शक्ये स वा के पुना हन्ता सा
प्रकैः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
लक्ष्मी शक्ति ह्रीं कृतस्वाहा - चारुजप - २२ ॥ यो नैतरे शक्ये स वा के पुना हन्ता सा
प्रकैः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
लक्ष्मी शक्ति ह्रीं कृतस्वाहा - चारुजप - २२ ॥ यो नैतरे शक्ये स वा के पुना हन्ता सा
प्रकैः ॥

प्रीतिवानभेतमारुवायुभेतमारुदीर्घीनीभेतमारुफलाना
कोमहनीभेतमारुतत्पेगहवंडुसाथीदेवताकोवाचाहिकृत
स्वाहा-धारजप-२२ धोमैतरसर्ववेंथातइपनीहुंद

अंनमगुरुआग्याचतुफक्तुहुतुपौतुफक्तुवायुपक्तदतुमातु
हुंफक्तस्वाहा-धारजप-१२-धोमैत्रपेलसरेद्यावेगु

भुतभदूरवित्वाहीग्यानडनरसीकांकीजपाहनमानबडदीसापथा
वेफक्तनरसीहुंफक्तस्वाहा-धारजप-१२-धोमत्रभुतहतेद्यावेगु
अंहीकीहुंफक्तस्वाहा-धारजप-१२-धोमैत्रकीदीवेगु

२०
अंहीकीहुंफक्तस्वाहा-धारजप-१२-धोमैत्रकीदीवेगु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ध्यायेत् ॥ १ ॥

ता - धार जप - १२ - धो मंत्र दुध ने गु जंत्र

ॐ सी धी गुरु आ जग दुस पहल त तुं फल त स्वा ता - धार जप - १२

धो मंत्र मीषा या गु जारे या गु

ॐ नमो गुरु आ जग मे गन था त दी गन था त तुं फल त स्वा ता - धार जप १२

धो मंत्र कपा स्वा गु या गु

ॐ नमो गुरु आ जग नै कां ली कै का ली भा ग नारी वै स स्वा का

गुहरी पारवती इ स्वरी माहा देव हं फल साह
थो मीतर सामे प्राण्यारे प्राण्य

३ नै काली कै काली आगारी वे च मह्य माहा काली श्रीरमल
गुहरी पारवती माहा देव को वा वाहं फल साह - चारण पवर
थो मीतर सामे प्रात तारमत ये जीम वां प्राथे दु पीतं हल वन तो जी

३ नम गुरु आगारा सीं गुहरी पात फल प्रभै रह गुरु वा चै लो गइ नी
वा चै वा चै कै वा वा गुरु कै वा वा हं फल साह - चारण पवर
थो मीतर था ना हल सा प्राथे गुहरी प्राथे गुहरी सा क वी सी ज तो
न कै गु

३ नम सीधी गुरु श्री अही गवसा हं फल था न नी अम क व

मन्त्रादि ध्यानादुक्त साध्याध्यायः २५ रथाध्यायः २६ साक वसिष्ठो
न के ५

३ नमसीधरी गुरु श्री ३ हीं गवता १०० ह्रीं तथाननी अमृक् व
स नो नाथे स्वाहा - चारजप - १० थो मंतर वीधुती काय गुरु नवी
था गुरुना समस्त ता पाल मरे वीधुती वीत ये ५५ ॥

३ नम गुरु भाग्या नरवी रजग तं कुमारी मन उरसी व्यापे व व तु
स्वाहा - चारजप - १२ थो मंतर पुशं को काये ५५

३ नम गुरु भाग्या सुनती मे सवता इ भाष रमारी य कर मारी दे रमारी भे
रमारी वो क सी री ता हे की न ज रवा नी रा प्र क हु नु मान प हे न व ता हे
हु नु मान को ता हे दे दे व पु न र सी ग गुरु को चार ज

७०० नमो नीरुते श्रुत स मुद्रा प्रहार काली जोर मना
 रवा वाहु डे डेल नी वाता नि डेली वा वा गुह मे सै प्ररी मे रा भ ग रा ल
 दी मन के वा वा कु मार की ना वा हु क त सा हा - चार जप - व. ५ - धो.
 मंतर वो क सो भी रे घा ये गु

ॐ गुरु आग्या वरीं मेरु दुमन संगता मेरी गर भगती पारवती केवा
ना ही ही ही हुं हुं हुं कृत साहा - धार जप - वर थो मंतर फल ली इच्छे का
न धुने गु सतना स सुइ गु



ॐ नमो भगवते श्री चहा माहा लोकनाथ ईश्वर सुतन रसी
यमा नृपति भद्रा सपुत्र मात यर्षी जीर्णी द्विपुत्र स्यात्ता-चा
रजम-३-धोमीतारतु काये कात्त सा थाउ कर्जी जलप्रे कषु के
सुथ दाये नो कसीनी सात पुत्र यमा मर्क

ॐ हा ३७३ भाग्या ॐ हा ३ वं द्रुया भाग्यात-धारजम-५१
धोमीतारतु देवा मा के गु

ॐ हा ३७३ भाग्या ॐ हा ३ वीं मातारि देधार शिफ के मा के उ
उह दाने धार ये द्विपुत्र स्यात्ता-धार-३० धोमीतारतु देवा मा के गु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - धारजप - २५ धोमंतरनी काये
उत्तमो मातलो के जपान्तो हा पाये धुप धनो वस्त्रा पु ये लव
हा पाये गु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - धारजप - २५ धोमंतरनी काये
उत्तमो मातलो के जपान्तो हा पाये धुप धनो वस्त्रा पु ये लव
हा पाये गु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - धारजप - २५ धोमंतरनी काये
उत्तमो मातलो के जपान्तो हा पाये धुप धनो वस्त्रा पु ये लव
हा पाये गु

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः - धारजप - २५ धोमंतरनी काये
उत्तमो मातलो के जपान्तो हा पाये धुप धनो वस्त्रा पु ये लव
हा पाये गु

...का...-...-...-...

...
...
...
...

...मौ...
...
...
...
...
...
...
...
...



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्री गणेशाय नमः
श्री कृष्णाय नमः श्री अर्जुनाय नमः

३ नमो भगवते वासुदेवाय श्री गणेशाय नमः
श्री वल्लभा नतना नहि हिंही ही हिंही तत्त्वार्थ चार जप १२
धोमी तरनवी जन्मी सा प्रापता सी गुजी जा सन प्रभा वचरी
बुध मी सादये मी सा घाना म का ये लनी वरा रन थो ने माल
भ नी मु के मी सा कथा या ये गु

[illegible]

ASNA ARCHIVES

ASNA ARCHIVES

ॐ नमस्तुभ्य आग्रा अकासक ॥ हस्त नंदुस्तु जेवर ताता कातीना
जधोरी थोरी भारं यौत फरु फरु तस्माहा - चारजप - १२ - थो
मंतर अकासना जघागु मंत्र चारे धायेगु

ॐ नमस्तुभ्य आग्रा के जागी धर को चार दोरी डीनु के वाचा जागी धर
को वाचा करुना आन गुरु हं फरु तस्माहा - चारजप - १२ थो मंतर
रसप्रेता इहुने चरेनु

ॐ नमस्तुभ्य आग्रा श्रीलोक नीधती लोक अर्चक भिरे

वीवी नाथे हं फरु तस्माहा - चारजप - १२ थो मंतर धु व

ॐ नमो गुरु भगवता श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वैवी नाथे हं फल तं साहा-चार जप-५२ थो मंतर धु व.
जप घा ना दे न्येत ये जु ॥

ॐ नमो गुरु भगवता श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ली माहा-धिता हती मान सत्यै कुमा तावी र कें हा मा डू कु सत्ये मा शी
भ डै र व से लै बो शी गुरु हं फल तं साहा-चार जप-५१-थो मं
तर श्री वा यु था गु

ॐ सी धी गुरु भगवता श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
गो नी गुरु हं फल तं साहा-चार जप

१२ थो मंतर सगु रो गु या गु हारे या य गु

ॐ नमः गुरु आग पा पाती सी पाती सी लं लं धु ची सा पा पी स सु
धारा ही रा जा इ हरी हं क त स्वा हा - चार जप वर - थो मंतर सगु
लो या ये गु हारे या ये गु

ॐ अ इ दे हं न हं क त स्वा हा - चार जप - १३ - थो मंत्र दा फ
ये गु

ॐ चंदर सु जन म स का द दे वा ही स र व्र ज जो जी री प
मारी मी की री की जी री जी री सर सर व द
~~मारी सी पाती हं क त स्वा हा~~
मारी सी पाती हं क त स्वा हा - चार जप -

मारी मी कीरी की जीरी जीरी सर सर वद

मारी मी वाली हुं कृत स्वा

मारी मी वाली हुं कृत स्वा हा - चार जप -

वाली मा इ द्या गु

ॐ नमो गुरु आ ज्ञा सीता सीता सी ~~ता~~ सीत हुं कृत स्वा
हा - चार जप - ३ - धो मंत्र म वात तरा सर्व जीत जहारे या गु

ॐ सी धी गुरु आ ज्ञा हा तु वा दुर हुं कृत स्वा हा - चार
जप - १२ - धो मंत्र म रा क व ज म रा

ॐ नमो गुरु स्व वा वा गुरु दुर थ र स्वा ते के वा वा हुं कृत स्वा हा
धो मंत्र तु दा त रा जहारे या दे गु चार फ क द्या दे गु

ॐ सीधी गुरु आ ग्या ॐ गुरु आ रा जन मुख रे गुरु आ
उजाहु फल स्वाहा - आरजप - १२ - थो मंत्र - ७ अइसा
याग वषाती धुंगा आउ येतां वरा मंथे रता दुं पहानु

ॐ सीधी गुरु आ ग्या हाहु त वायु दु त वायु हु फल
स्वाहा - आरजप - १२ - थो मंतर सर क वंसा यागु हारे थो गुरु

ॐ नम गुरु आ ग्या मलु आ ग्या सल प वी वी पन नी ये सै नी
का ती वीरी वष नाम वुं इ माहा गुन वी वष मात वी वष

त फल मंत्र इ स्वत वा वी हु फल स्वाहा - आरजप २ थो

नमस्तस्मै ब्रह्म स्वामी वाचं कृतं स्वाहा - धारजप २ थो
मै ० तार गद सभा नने दे प्रेम नंतु तसी जप गुर कर रनु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय को लो वी लो लो ना जा वी ना श्री तं मु त
मो हा पु रं कृत स्वाहा - धारजप २ थो मै तार दा पु न ती हत
सा थो मै त्र या ये गु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्री तत् स वे की री मा ता गु ना स ये ना
स स है है कृत स्वाहा - धारजप १०० थो मै तार स के स हने
सा थो गु

ॐ नमः पुराणा-आषाढी चार सा फ न हि फ तस्मात्
चार जप वर थो मंत्र श्री सा पुनः तसा या ये गु

ॐ नीसी सी वरु कती उपतय कमता स हि नता सन चकु
ने हा ह ते फ तस्मात्-चार जप थो मंत्र चा फ ये गु वर

ॐ नी तस्मात्-चार जप पक्क या ये गु थो मंत्र नुदा गु
या गु

ॐ नु स सी दी मा नी पंच ये हा नी ह फ तस्मात्-चार
जप-२२-थो मंत्र चकु सी प थ ने गु गी ध हा जा सी

प थ ने गु

पथनेउ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

जय श्री गुरुदेव

ॐ नमो गुरुदेव आत्मा ल दी ल नमो क बल नमो व स ल जी
सी ल ल नमो जी मा गुरु देव आत्मा ल दी ल नमो - धार जप व प थो मे
नर सी त ल नमो जी मा गुरु देव

ॐ नमो गुरुदेव आत्मा ल दी ल नमो क बल नमो व स ल जी
गुरु धामी को वाने व ज जा गी नी सर ग जी गी नी को वाने
ये ली नु अ ग ती ला हू की ला थो की वाने ह्री ने वा ही र प था
हने गुरु वा वा हू सरी की वा वा हू क त स्वा ठा - धार जप २००॥

थोमैतरसेजारनेछेवाफेचा मोहमाहाजपगरीइतइछे
कमभरीराषनुजपगरीइराषीपुजागरन थोमैतरछे
~~बस~~भीकेगु—२२—

ॐ नमो गुरु भाग्या ६६ देवी हि कृत स्वाहा—चार जप १२
थोमैतर भुत वरुनेपसाचा कथा कै कै गु

ॐ नमो गुरु भाग्या सीं देवी कुमली जावै व कुली हा जा
वोवो कमनी जावै लोत हि कृत स्वाहा—चार जप १२

थोमैतर सुनान ली हल सा था थ गु

ॐ नमो गुरु भाग्या वृज वैट माहा कोली रुती कती ली है

धोमंतरसुनीनलीरुतसाथाथेगु

ॐ नमस्तुभ्यं प्रजवंदुमाहात्म्यं कर्तुमीह
हैकतस्याह-आरजप-७ धोमंतरककजानवने
वलेजोयाभयेसाथावनेमातसाधानावयेगु

ॐ नमस्तुभ्यं प्रजवतासवतासरवतेरवतेवायुक
वायुकैहिकतस्याह-आरजप-२२ धोमंतरव्यालजु
रससाहीदीयेगु

ॐ नमो गुरु आगपा नीसी तनी दुष आगपा जो दे जो दु
जो ने जो न दे जो आ ० गुरु थ साहा - १ थोमी तर
तु नं थो गुरु

ॐ नमो सा धी गुरु आगपा को नी न भी रा थ गुरु रा
मल दु मन को ध न क नी न वी पदा थो गुरु रा
म न न को स ते वा को धार व स नी प
रु रु क त साहा चार न प व ४ थोमी तर भी रा

उ नी ती का थो गुरु

ॐ नमो गुरु आगपा नीसी तनी दुष आगपा जो दे जो दु

ॐ नीलीकाशेऽऽ

ॐ नीलीं देवीं कपालं हृत्कुंतीं सुपुत्रीं चैतवीं
तौं कुं कुं कुं कुं तौं तं स्यात् - चारजप धोमी न धात्वा चै

ॐ नमः गुरुभ्याम् भुतपीसायै तर्भनाम। धुत्तगुरु
आग्या हं हं हं तस्यात् - चारजप - ४३ धोमी न भुतहता
ॐ नमो नार

ॐ नमो श्री गुरुभ्याम् साधो वन्द्याः ॐ नमो ॐ

तरुं के सवतार फाने उरु फल स्वाहा - धारजप - य

धोमंतर से कदु या तजी उ

उरु उरु आग्या जेई वरवाहा ग मातुरा त सी कल के फल
के फल वा वा उरु आग्या ई फल स्वाहा - धारजप २२ धोम

तरु जाना के ई या उरु जारे

उ नम उरु आग्या वा कर माहा काली जगं धरी के वाचा ई फ
ल स्वाहा - धारजप - २५ धोमंतर ही वा उरु या उरु जारे या ये उ

उ नम उरु आग्या वा कर माहा काली जगं धरी के वाचा ई फ
ल स्वाहा - धारजप - २६ धोमंतर ही वा उरु या उरु जारे या ये उ

ॐ नमः गुरुभ्यो नमः श्रीगणेशाय नमः
नरसींग भक्त श्रीहृदय प्रणमादिदा हू नमो हरे जास त्वं वो कसी
भाहरी फल स्वाहा - धारजप - वरधोमी तरमगा ॥ गुरोगया
गछारे चाये गुत अनथने गयोमी तर या गुनी

[illegible]

२ नमः उक्त आगनागरी जैको वा नानागरी को वा बाहो द्वि फल स्वाहा
आरज्य - २२ - धामतर नाग सागुत वात ~~क~~ यात नाग वलाम
लासाथे ७७ - - - - -

